ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 206-209**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

कामायनी : चित्ति और चितेरी चिति–चेतना, सृजन और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का अंतर्संबंध

प्रोफेसर मुन्ना तिवारी
आचार्य, हिंदी विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0प्र0) भारत

Received-29.11.2025, Revised-07.12.2025, Accepted-13.12.2025 **E-mail: munnagkp01@gmail.com**

सारांशः ***जयशंकर प्रसाद की कामायनी हिंदी साहित्य की उन महत्त्वपूर्ण कृतियों में है जिसमें मिथकीय आख्यान के माध्यम से मनुष्य, चेतना, प्रकृति, ज्ञान, भावना, कर्म और आनंद के प्रश्नों पर व्यापक दार्शनिक विमर्श उपस्थित हुआ है। कामायनी के केंद्र में स्थित 'चिति' केवल आध्यात्मिक या दार्शनिक अवधारणा नहीं है, बल्कि वह ऐसी सृजनात्मक चेतना का संकेत देती है जिसके माध्यम से जड़ और चेतन, व्यक्ति और विश्व, अनुभव और अभिव्यक्ति तथा इच्छा, ज्ञान और क्रिया के बीच संबंध स्थापित होता है। इसी संदर्भ में 'चितेरी' की संकल्पना को देखा जाए तो वह रचनात्मक चित्त की आधुनिक सामाजिक–सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आती है। विशेषतः बुंदेलखंड की लोकभित्ति–चित्र परंपरा में 'चितेरी' शब्द रंग, रेखा, स्मृति, लोकानुभव और सामुदायिक सृजन से जुड़ा हुआ है।***

यह शोध–पत्र कामायनी में अभिव्यक्त 'चिति' की दार्शनिक अवधारणा और 'चितेरी' में अभिव्यक्त सृजनात्मक चेतना के अंतर्संबंध का अध्ययन करता है। इसमें कश्मीर शैवदर्शन की चिति–धारणा, कामायनी के मनुदृश्रद्धादृइड़ा त्रिकोण, इच्छादृज्ञानदृक्रिया के समन्वय तथा आनंद और समरसता की अवधारणाओं को 'चितेरी' की लोक–सांस्कृतिक और समकालीन रचनात्मकता से जोड़कर देखा गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि 'चिति' चेतना का दार्शनिक आधार है, 'चित्त' उसका मानवीय अनुभव–क्षेत्र है और 'चितेरी' उस चेतना के दृश्य, साहित्यिक, कलात्मक और सांस्कृतिक रूपांतरण की प्रक्रिया का प्रतीक बन सकती है। इस प्रकार कामायनी की 'चिति' और 'चितेरी' के बीच संबंध प्रत्यक्ष समानता का नहीं, बल्कि चेतना से सृजन और सृजन से सांस्कृतिक अभिव्यक्ति तक जाने वाली एक वैचारिक यात्रा का है।

कुंजीभूत शब्द– कामायनी, जयशंकर प्रसाद, चिति, चित्त, चितेरी, कश्मीर शैवदर्शन, सृजनात्मक चेतना, समरसता, लोकसंस्कृति।

1. प्रस्तावना–हिंदी साहित्य के इतिहास में कामायनी का स्थान केवल एक महाकाव्य के रूप में निर्धारित नहीं किया जा सकता। यह ऐसी काव्य–कृति है जिसमें मिथक, दर्शन, मनोविज्ञान, संस्कृति और आधुनिक मनुष्य की समस्याएँ परस्पर अंतर्गुम्फित हैं। प्रलय के बाद मनु की चेतना से आरंभ होने वाली इसकी कथा वस्तुतः मनुष्य की आंतरिक यात्रा का रूपक है। मनु अकेले व्यक्ति नहीं हैं; वे मनुष्य की उस चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अनुभव, स्मृति, इच्छा, बुद्धि, भावना और कर्म के बीच संतुलन की खोज करती है।

कामायनी की दार्शनिक संरचना को समझने के लिए 'चिति' की अवधारणा विशेष महत्त्व रखती है। प्रसाद की काव्य–दृष्टि में चेतना निष्क्रिय सत्ता नहीं है। वह सृजनशील है, गतिशील है और जगत् को अर्थ प्रदान करती है। इसी कारण कामायनी का मनुष्य केवल परिस्थितियों का शिकार नहीं, बल्कि अपने अनुभव और चेतना के माध्यम से संसार को पुनर्गठित करने की क्षमता रखने वाला अस्तित्व है।

दूसरी ओर 'चितेरी' शब्द अपने भीतर चित्रण और सृजन की लोकपरंपरा को समेटे हुए है। बुंदेलखंड की लोकभित्ति–चित्र परंपरा में चितेरी केवल चित्र बनाने वाली कला या कलाकार का नाम नहीं है; वह लोकजीवन के अनुभवों, संस्कारों, स्मृतियों, ऋतुचक्र, आस्था, श्रम, उत्सव और सामुदायिक जीवन को दृश्य रूप देने वाली सृजनात्मक प्रक्रिया का प्रतीक है। इस अर्थ में 'चितेरी' को व्यापक रूप से उस रचनात्मक चेतना का रूपक माना जा सकता है जो अपने समय और समाज को अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

यहीं कामायनी की 'चिति' और 'चितेरी' के बीच एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक संवाद निर्मित होता है। एक ओर 'चिति' चेतना की दार्शनिक सत्ता है, दूसरी ओर 'चितेरी' उस चेतना की सृजनात्मक अभिव्यक्ति। एक का क्षेत्र अंतःचेतना और विश्वचेतना है, दूसरे का क्षेत्र कला, संस्कृति, लोकजीवन और सामाजिक अभिव्यक्ति। दोनों के बीच संबंध चेतना से सृजन तक की यात्रा का है।

2. 'चिति' की दार्शनिक पृष्ठभूमि– 'चिति' शब्द भारतीय दार्शनिक परंपरा में चेतना के सक्रिय, स्वप्रकाशित और सृजनात्मक स्वरूप का बोध कराता है। कश्मीर शैवदर्शन, विशेषतः प्रत्यभिज्ञा परंपरा में चिति को परम चेतना के रूप में देखा गया है। यहाँ चेतना किसी निष्क्रिय प्रकाश की तरह नहीं है; वह स्वयं में प्रकाशमान होने के साथ–साथ विश्व की अभिव्यक्ति की सामर्थ्य भी रखती है।

इस दृष्टि में विश्व चेतना से अलग कोई पूर्णतः स्वतंत्र सत्ता नहीं है। चेतना अपने भीतर विश्व को धारण करती है और अपनी शक्ति के माध्यम से उसे अभिव्यक्त करती है। इसी कारण कश्मीर शैवदर्शन में शिव और शक्ति का संबंध केवल देवतामूलक संबंध नहीं, बल्कि चेतना और उसकी सृजनात्मक शक्ति के अंतर्संबंध का दार्शनिक रूपक है। कामायनी की वैचारिक संरचना को इसी परिप्रेक्ष्य में पढ़ने पर उसकी अनेक पंक्तियों और प्रसंगों का नया अर्थ खुलता है। प्रसाद लिखते हैं–

"चिति का स्वरूप यह नित्य–जगत"

यहाँ 'चिति' विश्व को केवल देखने वाली चेतना नहीं, बल्कि जगत् की संरचना और अनुभूति के मूल में स्थित सत्ता के रूप में सामने आती है। इसी क्रम में–

"कर रही लीलामय आनंद–
महाचिति सजग हुई–सी व्यक्त।"

'महाचिति' का व्यक्त होना चेतना के सृजनात्मक आयाम की ओर संकेत करता है। यहाँ जगत् एक निष्प्राण व्यवस्था नहीं, बल्कि चेतना की सक्रिय अभिव्यक्ति के रूप में देखा गया है। इस प्रकार 'चिति' को तीन स्तरों पर समझा जा सकता है–

1. चेतना के रूप में,
2. सृजनात्मक शक्ति के रूप में, और
3. विश्व–अभिव्यक्ति के आधार के रूप में।

यही त्रिस्तरीय अर्थ आगे 'चित्त' और 'चितेरी' की अवधारणाओं को समझने की आधारभूमि प्रदान करता है।

3. चिति से चित्त तकः चेतना का मानवीय धरातल– दार्शनिक स्तर पर 'चिति' व्यापक चेतना है, जबकि मानवीय अनुभव के धरातल पर उसका संबंध 'चित्त' से स्थापित होता है। मनुष्य संसार को केवल बुद्धि से नहीं जानता। वह उसे अनुभव करता है, स्मरण करता है, उससे भावनात्मक संबंध बनाता है और फिर उसे भाषा, कला, संगीत, साहित्य अथवा अन्य सृजनात्मक माध्यमों में अभिव्यक्त करता है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

कामायनी की संरचना में मनु का चरित्र इसी अंतःचेतनात्मक यात्रा का प्रतिनिधित्व करता है। प्रलय के बाद मनु का अकेलापन बाह्य संकट से अधिक एक गहरे आंतरिक संकट का प्रतीक है। धीरे–धीरे श्रद्धा और इड़ा के आगमन से उनकी चेतना के अलग–अलग आयाम सक्रिय होते हैं। श्रद्धा संवेदना, आस्था और हृदय का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि इड़ा विवेक, तर्क और बौद्धिकता का। मनु के माध्यम से इन दोनों के बीच उत्पन्न तनाव आधुनिक मनुष्य की आंतरिक स्थिति का रूपक बन जाता है। इस दृष्टि से कामायनी की मूल समस्या केवल 'मनु क्या करता है' नहीं है, बल्कि यह है कि मनुष्य अपनी विभिन्न चेतनात्मक शक्तियों का समन्वय किस प्रकार करे। यही कारण है कि काव्य में इच्छा, ज्ञान और क्रिया का संबंध अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है–

"इच्छा, ज्ञान, क्रिया वाले ये।"

मानव–चेतना तभी पूर्णता प्राप्त करती है जब उसकी इच्छा ज्ञान से और ज्ञान क्रिया से संबद्ध हो। केवल इच्छा मनुष्य को कल्पना तक सीमित कर सकती है; केवल ज्ञान उसे बौद्धिक बना सकता है और केवल क्रिया उसे यांत्रिक बना सकती है। समन्वय ही सृजन का आधार बनता है।

4. 'चितेरी' : चित्त की सृजनात्मक अभिव्यक्ति– 'चितेरी' शब्द को यदि व्यापक सांस्कृतिक अर्थ में देखा जाए तो वह 'चित्र बनाने' की क्रिया से आगे बढ़कर अनुभव को रूप देने की क्षमता का प्रतीक बन जाता है। लोकभित्ति पर बनाए गए चित्र केवल सजावट नहीं होते। उनमें लोकजीवन की स्मृति, सामाजिक संरचना, धार्मिक विश्वास, ऋतुचक्र, पारिवारिक संस्कार, स्त्री–अनुभव, श्रम–संस्कृति और सामुदायिक आकांक्षाएँ दृश्य रूप ग्रहण करती हैं। इस अर्थ में चितेरी अपने समय की सांस्कृतिक स्मृति को अंकित करने वाली सृजनशील चेतना है।

बुंदेलखंड की लोकभित्ति परंपरा इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखती है। दीवारें यहाँ केवल वास्तु का हिस्सा नहीं रहतीं; वे लोक–स्मृति की सतह में बदल जाती हैं। चित्रों में प्रकृति, पशु–पक्षी, विवाह, उत्सव, देवी–देवता, कृषि, लोकविश्वास और जीवन के विविध प्रसंग अंकित होते हैं। इस प्रक्रिया में घर की दीवार एक सांस्कृतिक पाठ में परिवर्तित हो जाती है। अर्थात–

चित्त → अनुभव → कल्पना → चित्र → सांस्कृतिक स्मृति

यह क्रम 'चितेरी' की सृजनात्मक संरचना को समझने का उपयोगी सूत्र प्रदान करता है।

यदि कामायनी की 'चिति' विश्व को अभिव्यक्त करने वाली चेतना है, तो 'चितेरी' स्थानीय और मानवीय अनुभव को दृश्य तथा सांस्कृतिक रूप देने वाली सृजनात्मक चेतना है।

5. कामायनी और चितेरी : अंतःचेतना से सांस्कृतिक अभिव्यक्ति तक– कामायनी और 'चितेरी' को जोड़ने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण सूत्र सृजन है। कामायनी में प्रलय के बाद मनु के सामने मूल प्रश्न पुनर्निर्माण का है। संसार नष्ट हो चुका है; इसलिए केवल पुराने संसार की पुनरावृत्ति संभव नहीं। एक नए जीवन की रचना आवश्यक है। इसी अर्थ में प्रलय केवल विनाश का मिथक नहीं, बल्कि पुनर्सृजन की पूर्वपीठिका है।

चितेरी की प्रक्रिया में भी यही तत्व दिखाई देता है। लोक कलाकार उपलब्ध सांस्कृतिक स्मृतियों, अनुभवों और प्रतीकों को नए संदर्भ में पुनः संयोजित करती है। परंपरा यहाँ जड़ पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि सृजन के लिए उपलब्ध सांस्कृतिक सामग्री बन जाती है। इस प्रकार दोनों के बीच निम्न वैचारिक साम्य स्थापित किया जा सकता है–

कामायनी	चितेरी
चिति	सृजनात्मक चेतना
चित्त	अनुभव का क्षेत्र
मनु	मानवीय चेतना / सृजनकर्ता
श्रद्धा	संवेदना और आस्था
इड़ा	विवेक और बौद्धिकता
प्रलय	विघटन / संकट
पुनर्सृजन	सांस्कृतिक पुनर्रचना
आनंद	सृजन की पूर्णता
समरसता	संतुलित सांस्कृतिक जीवन

यह समानता प्रत्यक्ष दार्शनिक समरूपता का दावा नहीं करती। दोनों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियाँ अलग हैं। किंतु सृजनात्मक चेतना की दृष्टि से दोनों के बीच एक सार्थक संवाद स्थापित किया जा सकता है।

6. मनु–श्रद्धा–इड़ा और सृजनात्मक चेतना– कामायनी की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में मनु, श्रद्धा और इड़ा का त्रिकोण है। इसे केवल कथात्मक पात्रों के रूप में पढ़ना पर्याप्त नहीं है। ये तीनों मानव–चेतना के विभिन्न आयामों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मनु सक्रिय मानव सत्ता हैं। वे अनुभव करते हैं, संघर्ष करते हैं, निर्णय लेते हैं और भूल करते हैं। श्रद्धा जीवन के भावात्मक और आत्मीय पक्ष को उद्घाटित करती है। वह मनुष्य को जीवन के प्रति विश्वास और संबंधबोध प्रदान करती है। इड़ा विवेक, तर्क और ज्ञान की प्रतिनिधि है। वह अनुभव को बौद्धिक संरचना प्रदान करती है।

सृजन के लिए इन तीनों का संतुलन आवश्यक है। केवल भावुकता कला को आत्मपरक बना सकती है, केवल तर्क उसे शुष्क बना सकता है और केवल कर्म उसे यांत्रिक बना सकता है। 'चितेरी' की रचनात्मक प्रक्रिया भी इसी त्रिकोण को धारण करती है। लोकचित्र के पीछे अनुभव और संवेदना है; उसके रूपांकन में कल्पना और कौशल है; और उसके चयनित प्रतीकों के पीछे एक सांस्कृतिक बोध है। इसलिए 'चितेरी' को केवल 'चित्र बनाने वाली' के अर्थ में सीमित करना उसकी सांस्कृतिक भूमिका को संकुचित करना होगा। वह लोकजीवन की संवेदना को दृश्य भाषा प्रदान करती है।

7. इच्छा–ज्ञान–क्रिया और सृजन– कामायनी का एक केंद्रीय दार्शनिक सूत्र इच्छा, ज्ञान और क्रिया का समन्वय है। प्रसाद की दृष्टि में मनुष्य का विकास किसी एक शक्ति की प्रधानता से नहीं, बल्कि इन तीनों के संतुलन से संभव होता है। सृजनात्मक प्रक्रिया में भी यही बात लागू होती है।

इच्छा सृजन की प्रेरणा है।
ज्ञान उसे दिशा और संरचना देता है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

क्रिया उसे वास्तविक रूप प्रदान करती है।

चितेरी के संदर्भ में देखें तो कलाकार के भीतर किसी अनुभव को अभिव्यक्त करने की इच्छा उत्पन्न होती है। उसकी सांस्कृतिक स्मृति और कलात्मक ज्ञान उसे रूप देता है और हाथ की क्रिया उसे भित्ति पर अंकित कर देती है। इस प्रकारकृ

इच्छा → कल्पना → ज्ञान → कौशल → क्रिया → कला

यह प्रक्रिया कामायनी के इच्छादृज्ञानदृक्रिया सिद्धांत को सृजनात्मकता के व्यावहारिक धरातल पर समझने का अवसर देती है। इसीलिए चितेरी का कार्य केवल सौंदर्य–निर्माण नहीं है; वह चेतना को रूप देने की प्रक्रिया है।

8. लोकस्मृति और चितेरी– लोकसंस्कृति में स्मृति का विशेष महत्त्व है। लिखित इतिहास से पहले समुदाय अपने अनुभवों को गीत, कथा, प्रतीक, अनुष्ठान और चित्रों के माध्यम से संरक्षित करता रहा है। भित्तिचित्र इस सांस्कृतिक स्मृति के दृश्य दस्तावेज हैं।

चितेरी द्वारा बनाए गए चित्रों में किसी एक व्यक्ति का निजी अनुभव सामुदायिक अनुभव का रूप ले सकता है। विवाह का चित्र केवल विवाह का दृश्य नहीं रहता; उसमें विवाह संस्था से जुड़े सांस्कृतिक विश्वास, संबंध और सामाजिक संरचना भी उपस्थित होती है। इसी प्रकार ऋतु, कृषि, पशु–पक्षी या धार्मिक प्रतीक जीवन के व्यापक सांस्कृतिक अर्थों को धारण करते हैं। इस संदर्भ में 'चितेरी' को लोकस्मृति की दृश्य अभिलेखक भी कहा जा सकता है। कामायनी में भी स्मृति की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। प्रलय के बाद मनु के पास अतीत की स्मृति है और उसी स्मृति के आधार पर भविष्य का निर्माण संभव होता है। इस प्रकार कामायनी और चितेरी दोनों में स्मृति विनाश के बाद पुनर्सृजन की आधारभूमि बनती है।

9. परंपरा और नवाचार– 'चितेरी' की अवधारणा का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष परंपरा और नवाचार के बीच संबंध है। लोककला कभी पूर्णतः स्थिर नहीं रही। प्रत्येक पीढ़ी अपने अनुभवों के अनुसार पुराने प्रतीकों और रूपों में परिवर्तन करती रही है। इसी प्रकार कामायनी में भी प्राचीन मनु–कथा को आधुनिक दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक प्रश्नों से जोड़ा गया है। प्रसाद ने पुराण–प्रसिद्ध आख्यान को यथावत् प्रस्तुत नहीं किया; उन्होंने उसे आधुनिक मनुष्य की समस्याओं के लिए पुनर्सृजित किया। इस दृष्टि से कामायनी स्वयं परंपरा के रचनात्मक पुनर्पाठ का उदाहरण है और 'चितेरी' परंपरा के रचनात्मक पुनराविष्कार का। दोनों हमें यह समझने में सहायता करते हैं कि परंपरा का अर्थ अतीत की पुनरावृत्ति नहीं है। परंपरा तभी जीवित रहती है जब वह नए अनुभवों से संवाद करती है।

10. चितेरी : स्त्री–सृजन और सांस्कृतिक चेतना– बुंदेलखंड की भित्ति–चित्र परंपरा का अध्ययन करते समय स्त्री–सृजनात्मकता को विशेष महत्त्व प्राप्त होता है। घर की दीवारों पर अंकित अनेक चित्र घरेलू जीवन और स्त्री के अनुभव संसार से जुड़े रहे हैं। इस प्रक्रिया में स्त्री केवल दर्शक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की सक्रिय सर्जक बनती है। यहाँ 'चितेरी' का अर्थ एक विशिष्ट कलात्मक भूमिका से बढ़कर स्त्री की रचनात्मक उपस्थिति का प्रतीक भी बन सकता है। इस संदर्भ में कामायनी की श्रद्धा और इड़ा को नए ढंग से पढ़ा जा सकता है। श्रद्धा और इड़ा दोनों मनुष्य की चेतना के निर्माण में सक्रिय शक्तियाँ हैं। एक संवेदना और जीवन–विश्वास का प्रतिनिधित्व करती है, दूसरी ज्ञान और विवेक का। 'चितेरी' की सृजनात्मकता में भी संवेदना और कौशल का यही अंतर्संबंध दिखाई देता है।

हालाँकि चितेरी और श्रद्धा/इड़ा को सीधे समान मानना उचित नहीं होगा। दोनों अलग सांस्कृतिक संदर्भों की अवधारणाएँ हैं। लेकिन दोनों के माध्यम से स्त्री की सृजनात्मक और ज्ञानात्मक भूमिका पर विचार की संभावना अवश्य निर्मित होती है।

11. चिति, चित्त और चितेरी : एक वैचारिक त्रिकोण– इस पूरे विमर्श को तीन शब्दों के माध्यम से संक्षेपित किया जा सकता है–

चिति – चेतना का सार्वभौम आधारः चिति वह चेतना है जो अस्तित्व को अर्थ और अभिव्यक्ति की क्षमता प्रदान करती है।

चित्त – अनुभव का मानवीय क्षेत्रः चित्त वह क्षेत्र है जिसमें स्मृति, संवेदना, कल्पना, इच्छा, विचार और अनुभव सक्रिय होते हैं।

चितेरी – चेतना की सृजनात्मक अभिव्यक्तिः चितेरी वह प्रक्रिया है जिसमें चित्त के अनुभव और चेतना के संस्कार दृश्य, साहित्यिक, कलात्मक या सांस्कृतिक रूप ग्रहण करते हैं।

इस आधार पर निम्न सूत्र प्रस्तावित किया जा सकता है–

चिति → चित्त → चिंतन → सृजन → चितेरी

यह सूत्र कामायनी और 'चितेरी' के बीच संबंध को समझने का एक उपयोगी आलोचनात्मक मॉडल प्रस्तुत करता है।

12. 'चितेरी' और समकालीन रचनात्मकता– आज 'चितेरी' को केवल लोकभित्ति–चित्र परंपरा तक सीमित रखना आवश्यक नहीं है। आधुनिक विश्वविद्यालयीय और सांस्कृतिक संदर्भ में यह शब्द व्यापक सृजनात्मकता का रूपक बन सकता है। साहित्य, चित्रकला, फोटोग्राफी, रंगमंच, संगीत, शोध, विज्ञान, नवाचार और डिजिटल अभिव्यक्तिकृये सभी अपने–अपने ढंग से अनुभव को रूप प्रदान करते हैं।

इस अर्थ में छात्र–सृजनात्मकता की कोई पत्रिका 'चितेरी' नाम धारण करती है तो उसका अर्थ केवल चित्रों का संग्रह नहीं रह जाता। वह युवा चेतना के विविध रूपों का सांस्कृतिक दस्तावेज बन सकती है। इसमें कविता, कहानी, शोध, चित्र, लोकस्मृति, साक्षात्कार, रचनात्मक लेखन, विज्ञान और नवाचार जैसी विविध अभिव्यक्तियों को एक साथ स्थान मिल सकता है। यह विविधता स्वयं उस 'समन्वय' की ओर संकेत करती है जो कामायनी की मूल वैचारिक चिंता है।

13. 'समरसता' : दोनों अवधारणाओं का साझा बिंदु– कामायनी के अंतिम वैचारिक लक्ष्य के रूप में समरसता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्रसाद के यहाँ मनुष्य के भीतर और बाहर के विभाजनों को संतुलित करने की आकांक्षा दिखाई देती है। इच्छा और ज्ञान, भावना और बुद्धि, व्यक्ति और समाज तथा प्रकृति और मानव के बीच संतुलन आवश्यक है। इसी संदर्भ में काव्य की प्रसिद्ध पंक्ति है–

"समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय।"

'चितेरी' के सांस्कृतिक संदर्भ में भी समरसता का महत्त्व है। लोकचित्रों में प्रकृति, मनुष्य, पशु–पक्षी, ऋतु, श्रम, उत्सव और आस्था एक साझा सांस्कृतिक संसार का निर्माण करते हैं। वहाँ जीवन अलग–अलग खंडों में विभाजित नहीं होता। इस प्रकार कामायनी का दार्शनिक समन्वय और चितेरी की लोक–सांस्कृतिक समग्रता अलग–अलग स्तरों पर एक ऐसी जीवन–दृष्टि की ओर संकेत करती हैं जिसमें विविध तत्व परस्पर विरोधी न होकर पूरक बनते हैं।

14. आनंद और सृजन– कामायनी की दार्शनिक यात्रा अंततः आनंद की ओर उन्मुख है। यहाँ आनंद केवल इंद्रियसुख नहीं है। वह चेतना के संतुलन, अस्तित्व की स्वीकृति और जीवन के साथ समरस संबंध का परिणाम है। सृजन की प्रक्रिया में भी आनंद का एक विशिष्ट स्थान है। कलाकार अपने अनुभव को रूप प्रदान करते समय स्वयं को अभिव्यक्त करता है और इस अभिव्यक्ति के माध्यम से अपने अस्तित्व तथा परिवेश के बीच संबंध स्थापित करता है। लोकभित्ति पर चित्र अंकित करने वाली चितेरी के लिए भी चित्र केवल

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

बाहरी सज्जा नहीं है। वह उत्सव, सामुदायिकता और जीवन के साथ जुड़ी सृजनात्मक सहभागिता है। इस प्रकार 'आनंद' और 'सृजन' के बीच संबंध कामायनी तथा 'चितेरी' दोनों को समझने में उपयोगी है।

15. आधुनिक संदर्भ में कामायनी की प्रासंगिकता– आज का मनुष्य सूचना और तकनीक से समृद्ध होते हुए भी मानसिक तनाव, असंतुलन, अकेलेपन और मूल्य–संकट से जूझ रहा है। ज्ञान का विस्तार हुआ है, लेकिन ज्ञान और संवेदना के बीच दूरी भी बढ़ी है। तकनीकी दक्षता बढ़ी है, लेकिन प्रकृति और सामुदायिक जीवन से संबंध कई स्तरों पर कमजोर हुआ है। ऐसे समय में कामायनी का इच्छादृज्ञानदृक्रिया और समन्वय का विचार प्रासंगिक हो उठता है। इसी प्रकार 'चितेरी' की अवधारणा यह स्मरण कराती है कि मनुष्य केवल उपभोक्ता नहीं, सृजनकर्ता भी है। सांस्कृतिक जीवन की निरंतरता तभी संभव है जब व्यक्ति अपने अनुभवों को अभिव्यक्ति दे और सामूहिक स्मृति को नई पीढ़ियों तक पहुँचाए। इसलिए 'कामायनी' की चिति और 'चितेरी' की सृजनात्मकता को समकालीन संदर्भ में जोड़ना केवल साहित्यिक अभ्यास नहीं, बल्कि मनुष्य और संस्कृति के संबंध को समझने का एक संभावित आलोचनात्मक उपकरण है।

16. निष्कर्ष– कामायनी की 'चिति' और 'चितेरी' की संकल्पना दो अलग स्रोतों से आती हैं, इसलिए इनके बीच प्रत्यक्ष समानता स्थापित करना उचित नहीं होगा। किंतु दोनों को सृजनात्मक चेतना की दृष्टि से पढ़ने पर एक सार्थक वैचारिक संबंध सामने आता है। 'चिति' चेतना की व्यापक दार्शनिक सत्ता है। 'चित्त' उस चेतना का मानवीय अनुभव–क्षेत्र है। 'चितेरी' उस अनुभव और चेतना को कला, संस्कृति और सृजन में रूपांतरित करने वाली प्रक्रिया का प्रतीक है।

कामायनी में प्रलय के बाद पुनर्निर्माण की आकांक्षा है; चितेरी में सांस्कृतिक स्मृति को वर्तमान में पुनर्सृजित करने की प्रक्रिया। कामायनी में मनु के भीतर इच्छा, ज्ञान और क्रिया के बीच संतुलन की खोज है; चितेरी में संवेदना, कल्पना, कौशल और सांस्कृतिक बोध का समन्वय। कामायनी में श्रद्धा और इड़ा मनुष्य की चेतना के भावात्मक और बौद्धिक आयामों को सक्रिय करती हैं; चितेरी लोकजीवन के अनुभव और ज्ञान को कलात्मक रूप देती है।

इस दृष्टि से 'चितेरी' को केवल चित्रकला का संकेत मानना उसके अर्थ को सीमित करना होगा। वह स्मृति को अभिव्यक्ति में, अनुभव को रूप में, चेतना को सृजन में और परंपरा को नवाचार में बदलने वाली सांस्कृतिक प्रक्रिया का प्रतीक बन सकती है। अंततः 'चितिदृचित्तदृचितेरी' का सूत्र मानव–सृजन की एक व्यापक यात्रा को व्यक्त करता है–

चिति चेतना देती है,
चित्त अनुभव करता है,
चिंतन अर्थ देता है,
और चितेरी उस अर्थ को सृजन में रूपांतरित करती है।

यही वह बिंदु है जहाँ कामायनी की दार्शनिक चेतना और चितेरी की लोक–सृजनात्मकता एक दूसरे से संवाद करती हुई दिखाई देती हैं। एक विश्व को चेतना की दृष्टि से देखती है, दूसरी जीवन को सृजन की दृष्टि से अंकित करती है। दोनों मिलकर मनुष्य की उस मूल प्रवृत्ति को रेखांकित करती हैं जो विनाश, संकट और विस्मृति के बीच भी नए अर्थ और नए सौंदर्य की रचना करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रसाद, जयशंकर कृ कामायनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. प्रसाद, जयशंकर कृ काव्य और कला तथा अन्य निबंध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. शुक्ल, रामचंद्र कृ हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
4. द्विवेदी, हजारीप्रसाद कृ हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. नामवर सिंह कृ छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. नगेन्द्र कृ कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ, साहित्य–संदर्भ से संबंधित आलोचनात्मक ग्रंथ।
7. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली कृ भारतीय दर्शन, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।
8. सिंह, कन्हैयालाल कृ कश्मीर शैवदर्शन, संबंधित दार्शनिक अध्ययन।
9. शर्मा, रामविलास कृ परंपरा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद कृ छायावाद और उसकी प्रासंगिकता, साहित्यिक आलोचना संबंधी अध्ययन।
11. कश्मीर शैवदर्शन एवं प्रत्यभिज्ञा परंपरा से संबंधित मूल एवं आलोचनात्मक ग्रंथ।
12. बुंदेलखंड की लोककला, लोकभित्ति–चित्र एवं लोकसंस्कृति से संबंधित प्रकाशित अध्ययन एवं संकलन।

शोध–पत्र की संक्षिप्त अवधारणात्मक स्थापना

चिति → चेतना → चित्त → अनुभव → चिंतन → सृजन → चितेरी → सांस्कृतिक स्मृति

यह क्रम कामायनी की दार्शनिक चेतना और 'चितेरी' की सृजनात्मक सांस्कृतिक चेतना के बीच संवाद का केंद्रीय वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है।

*****